HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern West)

Unit-I, (Religious Reformation)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 43

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें □ □□

https://youtu.be/YLtaSJMwXZ4

◆ एलिजावेथ की धार्मिक नीति....

एलिजावेथ 25 वर्ष की उम्र में रानी मेरी की मृत्यु के बाद इंग्लैंड की गद्दी पर बैठी। वह हेनरी अष्टम एवं ऐन बोलोन की पुत्री थी। उसका राज्यारोहन विषम परिस्थितियों में हुआ था परंतु इंग्लैंड की जनता एलिजाबेथ के साथ थी। जिस समय एलिजाबेथ गद्दी पर बैठी उस समय सैनिक शक्ति सुदृढ़ नहीं थी। इंगलैंड के लगातार युद्ध में संलग्न रहने के कारण देश का खजाना खाली हो चुका था। घटिया सिक्कों के प्रचार से देश का व्यापार ठप्प पड़ चुका था। हेनरी अष्टम के धर्म सुधार आंदोलन के कारण भी देश में विषम स्थिति बनी हुई थी। उस समय देश में अच्छी सलाहकारों की कमी थी। इस प्रकार की विषम स्थिति को अनुकूल बनाने के लिए एलिजावेथ ने साहस, सूझ–बूझ एवं दृढता से काम लिया। संयोग से उसे सेसिल जैसा सलाहकार मिला जो विषम परिस्थितियों को संभालने में उसकी मदद करता था।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

एलिजाबेथ ने इंग्लैंड की गद्दी संभालते ही सर्वप्रथम इंगलैंड की धार्मिक समस्याओं की ओर अपना ध्यान केंद्रित किया। क्योंकि ट्यूडर राजाओं (हेनरी अष्टम, एडवर्ड, मेरी) ने पिछले 30 वर्षों में जो धार्मिक प्रयोग किए थे, वे असफल साबित हुए थे। इसीलिए धार्मिक नीति अपनाने में एलिजाबेथ और उसके मंत्री सेसिल ने सतर्कता से काम लिया और उन्होंने मध्यमार्ग की नीति अपनाई जो आगे चलकर स्थाई सिद्ध हुई।

★धार्मिक नीति:– एलिजावेथ के समय प्रोटेस्टेंट दल की शक्ति काफी बढ़ गई थी बाइबिल का अध्ययन कर धार्मिक विषयों में स्वयं निर्णय कर लेने की छूट से प्रोटेस्टेंट धर्म के लोकप्रियता बढ़ती जा रही थी। कैथोलिक धर्म कमजोर था। दूसरी बात यह थी कि कोई भी कैथोलिक देश रोम के पोप का विरोध नहीं कर सकता था। स्पेन के राजा फिलीप और स्कॉटलैंड के रानी मेरी कैथोलिक धर्म का साथ दे रहे थे। वह दोनों एलिजाबेथ के प्रतिद्वंदी थे। ऐसी अवस्था में कैथोलिक की अपेक्षा प्रोटेस्टेंट धर्म की ओर एलिजाबेथ का झुका स्वभाविक था। उसने उदार धार्मिक व्यवस्था की निति अपनाई, और उसने अंग्रेजी में प्रार्थना पढ़ने की आज्ञा दी।

★ 1559 ई.में ऐलिजावेथ ने पार्लियामेंट कि बैठक बुलाई। जिसमें निम्नलिखित धार्मिक कानून पारित किए गए :–

1.The repeal of the Act of 1554 – इस कानून के द्वारा सर्वप्रथम मेरी के समय का 1554 ई.का कानून रद्द कर दिया गया। जिसके तहत पोप की सत्ता पुनः खत्म हो गई और हेनरी अष्टम की धर्मव्यवस्था पुनः स्थापित हो गई।

2.1559 ई.की प्रभुत्वविधान (The Act of Supremacy) :–1559 ई. में प्रभुत्व विधान स्वीकृत हुआ। जिसके अनुसार रानी को सर्वश्रेष्ठ धार्मिक एवं सामाजिक अधिकार प्रदान किए गए। रानी व्यक्ति, चर्च और राजकीय मामलों में प्रधान समझी जाने लगी। वह सर्वोच्च गवर्नर की पदवी ली। इस प्रकार चर्च के संबंध में सलाह देने के

Dr Guddu Kumari (A.N.D College)

लिए पार्लियामेंट रानी को बाध्य नहीं कर सकती थी। वस्तुतः रानी चर्च की वास्तविक प्रधान बन गई थी।

3.समानता का विधान (The Act of Uniformity) :– 1559 ई.में ही समानता का अधिनियम पारित हुआ। इस कानून के द्वारा एडवर्ड की द्वितीय प्रार्थना पुस्तक का व्यवहार सभी चर्च के लिए अनिवार्य कर दिया गया। पादरियों की पोशाक और चर्च की सजावट पहले जैसे ही रखी गई। एडवर्ड छठे के 42 धार्मिक अनुच्छेदों को घटाकर 39 कर दिया गया।

प्रभुत्व एवं समानता का विधान एलिजाबेथ की चर्च व्यवस्था का आधार था। यह व्यवस्था नवीन नहीं थी, किंतु इससे एलिजाबेथ की बुद्धिमता का परिचय मिल जाता है। पोप की संप्रभुता नष्ट हो गई और सामान एवं अनिवार्य अंग्रेजी सेवा की व्यवस्था लागू की गई। धार्मिक आज्ञाओं का पालन करवाने के लिए एलिजाबेथ ने कोर्ट ऑफ हाई कमीशन की स्थापना की। इसके अधिकारी धर्म विरोधियों का पता लगाते थे, चर्च की सामूहिक प्रार्थना में अनुपस्थित रहने वालों को दंड देते थे और न्यायधीश, मेयर एवं अन्य पदाधिकारियों को शपथ दिलवाते थे। इस कमीशन के द्वारा रोमन बिशप और पादरियों को पद से हटा दिया गया।

★ एलिजावेथ की धार्मिक उदारता...

एलिजाबेथ की चर्च व्यवस्था उदार थी। प्रभुत्वविधान के अनुसार पादरीयों और अधिकारियों को ही शपथ लेनी पड़ती थी। सर्वसाधारण के लिए शपथ लेना अनिवार्य नहीं था। प्रार्थना–पुस्तक से कैथोलिकों के लिए घातक परिच्छेद हटा दिए गए थे। उसमें रोम के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं था स्वेच्छानुसार लोग किसी भी धर्म मार्ग को अपना सकते थे। धार्मिक व्यवहार में कोई कठोरता नहीं थी। केवल पोप के आधिपत्य को स्वीकार करने वाले व्यक्ति ही दंड के भागी होते थे। रानी मेरी के एक विशप तथा अन्य 200 पादरियों ने प्रभुत्वविधान को स्वीकार नहीं किया। उन लोगों के पद त्याग करने पर एलिजाबेथ ने अपने इच्छानुसार नए व्यक्तियों की नियुक्ति कि। अब चर्च के

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

सभी नेता उसके के पक्ष में आ गए। जो कैथोलिक चर्च में पूजा पाठ करना पसंद नहीं करते थे उन्हें एक सीलिंग का जुर्माना देना पड़ता था। 20 सीलिंग प्रतिमा दंड देकर कोई भी कैथोलिक सपरिवार गिरजाघर जाने से मुक्त हो सकता था। उस समय कैथोलिक रहना अधिक महंगा पड़ता था, क्योंकि उन्हें दंड के अतिरिक्त पादरियों को भी भेंट देनी पड़ती थी। मितव्यई लोग चर्च जाना ही सही समझते थे। समय अनुकूल रहने के कारण एलिजाबेथ को अपनी नीति में पूरी सफलता मिली।

निष्कर्षत:हम कह सकते हैं कि एलिजाबेथ की धार्मिक नीति पूरी तरह सफल रही।उसकी धार्मिक समझौते की नीति चर्च व्यवस्था के लिए दिशा निर्देश का काम किया और वह तत्कालीन शांति व्यवस्था को दृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुई। इसी के साथ प्रोस्टैंट धर्म इंग्लैंड में अपने पांव जमाने में सफल रहा।

Thanks

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)